अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 3 फाल्गुन-चैत्र वि.सं. 2080 मार्च, 2024 सहयोग राशि- अठारह रुपये पृष्ठ-28 RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x

समिति के आयोजन

समिति में पिछले दिनों अनेक कार्यक्रम संपन्न हुए। पहला कार्यक्रम था पुरस्कार प्राप्त डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का प्रदर्शन। यह जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टीवल (जिफ़) की सहभागिता में हुआ। एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'वेटिंग फार कल्की' के निर्देशक भी आये जिनसे उनकी फिल्म पर उपस्थित दर्शकों ने संवाद किया।

समिति के पूर्व अध्यक्ष स्व. रमेश थानवी को समिति के कार्यकर्ताओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर उनको याद किया।

समिति में बसंत पंचमी का उत्सव मनाया गया। समिति की संयुक्त सचिव श्रीमती नीलम अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर सरस्वती मां की पूजा अर्चना की। समिति के सभी कार्यकर्ताओं ने उत्साह से इसमें भाग लिया। सुरसंगत कार्यक्रम का नियमित आयोजन भी समिति में संपन्न हुआ। जिसमें मशहूर शायर साहिर लुधियानवी पर विमर्श हुआ। ❑

खास–खबर

बीकानेर में भार्गव स्मृति व्याख्यान

बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति ने 'जनरल जयदेव सिंह भार्गव स्मृति विचारपीठ' के तहत 'आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस एवं सामाजिक परिवेश' विषय पर प्रौढ़ शिक्षा भवन सभागार में एक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जिसके मुख्य वक्ता थे सूचना तकनीकी एवं ए–आई अध्येता चन्द्रकुमार। उन्होंने कहा कि कृत्रिम बुद्धि/ मेधा मानवीय भविष्य के लिए अवसर के साथ ही चुनौती भी बन रही है।

स्मार्टफोन, कोरोना वैक्सिन, एम आर आई मशीन सहित विभिन्न तकनीकी अविष्कारों के निर्माण से जुड़े विभिन्न उदाहरणों एवं प्रसंगों के माध्यम से चन्द्रकुमार ने यह स्थापित किया कि जब भी किसी तकनीकी का आविष्कार होता है तब वे प्रयास जीवन को सरल और दक्ष बनाने के लिए होते हैं लेकिन बाद में उसका उपयोग करते समय लोग असंयमित एवं अनैतिक बन जाते हैं। इसलिए ए–आई तकनीकी मानवीय समाज के लिए बेहतर भविष्य के रास्ते तो बना रही है, लेकिन इसका अनैतिक संचालन सामाजिक परिवेश के लिए चुनौती भी बन रहा है। अध्यक्षीय उद्बोधन में समिति के अध्यक्ष डॉ. ओम कुवेरा ने तकनीकी बुद्धिमता का उपयोग करने के लिए मानव को अधिक बुद्धिमान बनना होगा। समिति के उपाध्यक्ष अविनाश भार्गव ने जनरल जयदेवसिंह भार्गव स्मृति विचारपीठ पर एवं समिति परिवार के सुरेश भार्गव ने जनरल साहब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति, जन शिक्षण संस्थान, बीकानेर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से चुनिंदा संदर्भ व्यक्तियों में से शहरी क्षेत्र से श्रीमती पूजा कच्छावा और श्रीमती ममता पंवार और ग्रामीण क्षेत्र से श्रीमती संतोष बाहेती और श्री तरूण राठौड़ को मेजर जनरल जयदेवसिंह सम्मान प्रदान किया। जन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष गिरिराज मोहता ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। ❑

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करौति किं।
लौचनाभ्याम विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यति।।

जिस व्यक्ति के पास अपनी (प्रज्ञा) अंतरात्मा नहीं है, उसके शास्त्रों का क्या फायदा, जैसे कि दर्पण अंधे व्यक्ति के लिए बेकार है।
सुभाषित

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 3 फाल्गुन-चैत्र वि.सं. 2080 मार्च, 2024

क्र म

वाणी

3. सुभाषित

संपादकीय

5. क्या अब छपे शब्दों के पाठक कम होने लगे हैं ?

लेख

7. परीक्षा की समय सीमा पर सवाल
– एडम ग्रेट

10. एआई वही करेगा जिसके लिए उसे प्रोग्राम करेंगे
– कार्लिन मेयर

लेख

12. राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना होगा
– डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

शायरी

14. फ़ाल्गुन का महीना मन में मचे शोर

रपट

16. सर्वे के आंकड़ों में शिक्षा की स्थिति पर खुश होने जैसा कुछ नहीं
– अंजलि मिश्रा

18. शिक्षित होने का मतलब
– नोम चोम्सकी

19. मल्टीनेशनल्स की धमक में धुंधले होते पारंपरिक मेले व उत्सव
– अशोक आत्रेय

21. जुनून दिमाग में और करुणा दिल में होती है!
– सुनील भारती मित्तल

22. क्रोध दुबलता है
– डॉ. ओम प्रकाश टाक

पर्यावरण

24. इमली : स्वादिष्ट मसाला ही नहीं औषधि भी
– देवदत्त शर्मा

समाचार

25. मरु मंथन 2024 : रेगिस्तानी जज़्बे का जश्न

26. **स्मृति शेष**

आवरण : किताबों का समय

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति

7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,

जयपुर-302004

फोन : 2700559, 2706709, 2707677

ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

संरक्षक :
श्रीमती आशा बोथरा

संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा

प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

संपादकीय

क्या अब छपे शब्दों के पाठक कम होने लगे हैं ?

आजकल बहुतों को ऐसा महसूस होता है कि पढ़ना उतना जरूरी नहीं रहा जितना पहले हुआ करता था। तो क्या अब गंभीर पाठक नहीं रहे? पाठक से हमारा आशय उन लोगों से है जो लिखित शब्द से दुनिया के बारे में जानकारी हासिल करते हैं और अपनी समझ बढ़ाते हैं। पढ़ना बहुतों के लिए लत की माफिक होता है। कुछ के लिए पढ़ना शौक या हॉबी भी हो सकता है। लेकिन सारे ही साक्षर लोग पाठक हों यह भी जरूरी नहीं है।

पिछले ज़माने में रेडियो और टेलीविजन ने अपना प्रभुत्व जमा कर पठन को चुनौती दी थी। नई टेक्नोलॉजी ने कहा जो पढ़ कर जाना जा सकता है, वह सुन और देख कर भी जाना जा सकता है। छापे को उनसे खतरा हुआ। लेकिन सबने देखा कि दृश्य-श्रव्य माध्यमों के उभरने और लोकप्रिय होने से छापा, या कहें प्रिन्ट माध्यम, समाप्त नहीं हो गया। लोगों को अब नया डिजिटल मीडिया पठन को चुनौती देता नज़र आ रहा है। प्रिन्ट की पत्र-पत्रिकाओं का घटता प्रसार इसकी ताईद करता है।

हालांकि दृश्य श्रव्य माध्यमों के पहले भी कुछ मात्रा में जानकारी और समझ मौखिक शब्दों और अवलोकन से भी हासिल की जाती थी। लेकिन बुद्धिमान और जिज्ञासु लोगों के लिए इतना काफी नहीं था। वे जानते थे कि उन्हें अपना ज्ञान और अपनी समझ बढ़ाने के लिए पढ़ना जरूरी है, और उन्होंने पढ़ा। पाठक तभी कुछ नया सीख पाता है जब वह अपने से बेहतर को पढ़ता है। लेकिन जानकारी में वृद्धि करने वाले तथ्य और समझ में वृद्धि करने वाली अंतर्दृष्टि में अंतर करना हमेशा आसान नहीं होता है। हालांकि यह स्वीकार करने में भी कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि कभी-कभी केवल तथ्यों के वर्णन से ही बेहतर समझ पैदा हो सकती है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मनोरंजन के लिए पढ़ना पाठक पर सबसे कम बोझ डालता है, और इसके लिए कम से कम प्रयास की आवश्यकता होती है। जिसे थोड़ा बहुत भी पढ़ना आता है वह चाहे तो मनोरंजन के लिए पढ़ ही लेता है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि जो चीज मनोरंजन के लिए पढ़ी जाने वाली हो वह समझ बढ़ाने के लिए भी पढ़ी जा सकती है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं लगा लेना चाहिए कि मनोरंजन की किताबें समझदार पाठकों को नहीं पढ़नी चाहिए। अधिक जानकारी पाना भी सीखना ही होता है क्योंकि जानकारी पाने से ही यह समझ में आता है कि हम पहले क्या नहीं समझ पाए थे। लेकिन इन दोनों प्रकार के सीखने के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर होता है।

इस पर भी अब गंभीरता से सवाल उठाया जा सकता है कि क्या आधुनिक संचार माध्यमों के आगमन ने उस दुनिया के बारे में हमारी समझ को बहुत बढ़ा दिया है जिसमें हम रहते हैं? अब शायद हम दुनिया के बारे में जितना पहले जानते थे, उससे कहीं अधिक और बेहतर जानते हैं। कहा जाता है कि समझ के लिए पूर्व शर्त ज्ञान की होती है। लेकिन विद्वानों ने यह भी कहा है कि समझ बढ़ाने के लिए ज्ञान की उतनी आवश्यकता नहीं होती जितनी आमतौर पर मानी जाती है। हमें किसी चीज़ को समझने के लिए उसके बारे में सब कुछ जानने की ज़रूरत नहीं है। वास्तव में बहुत सारे तथ्य अक्सर समझने में उतनी ही बाधा बन सकते हैं जितने कि बहुत कम तथ्य। हम आधुनिक लोग तथ्यों के सागर में एक तरह से इतना डूब जाते हैं कि उससे समझ का नुकसान ही होता है।

एक नई परिस्थिति यह भी बन गई है कि आधुनिक मीडिया इस तरह से डिज़ाइन किये जाने लगे हैं कि हमें खुद से सोचना अनावश्यक लगने लगे। अब हमारे समय के सबसे बेहतरीन दिमाग मीडिया में बौद्धिक पक्षों और विचारों की पैकेजिंग के उद्यम करते हैं। उपभोक्ता को जटिल मुद्दे सरल बयानों तथा सावधानीपूर्वक चयनित डेटा और आंकड़ों के साथ इस प्रकार परोसे जाते हैं कि उनके लिए अपना मन बनाना आसान हो जाए। उन्हें बिना किसी कठिनाई व प्रयास के सब कुछ मिल जाए और उन्हें अपने दिमाग पर कोई जोर नहीं देना पड़े। इससे बड़ा आराम और क्या हो सकता है। लेकिन पैकेजिंग अक्सर इतने प्रभावी ढंग से होती है कि उपभोक्ता अपना कोई मन बना ही नहीं पाता हैं। इसकी बजाय, वह अपने दिमाग में पैकेज की हुई राय को सहज ही शामिल कर लेता है। यह कंप्यूटर से पैन ड्राइव जोड़ने जैसा है। बिना सोचे समझे किसी राय को मान लेने का प्रदर्शन सोशल मीडिया पर हम रोज ही देखते हैं।

इस सच से इनकार नहीं किया जा सकता कि दृश्य माध्यमों के तकनीकी विस्फोट ने पठन-पाठन की आदतों में ज़बरदस्त हस्तक्षेप किया है। सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों, वेबसाइटों, ईबुक रीडर, किण्डल और दूसरे कई संस्करणों ने पाठकों की निगाहों को अपनी ओर तेज़ी से खींचा है। यह सही है कि मोबाइल, टीवी और कम्प्यूटर स्क्रीन पर पाठकों का ध्यान ज़्यादा जा रहा है, पर यह भी सही है कि ये माध्यम आंखों का सुकून छीनकर उनमें थकान भरते हैं।

तकनीक के मोर्चे पर अभी का हाल एक तरह से संक्रमण काल जैसा है। कुछ उसी तरह से जैसे कि शुरू में टीवी का आगमन हुआ तो हम उसकी स्क्रीन पर बस आंखें गड़ाए रहते थे। समाचार हो या कृषि-दर्शन, सब कुछ देखते थे। ऐसे ही आज की मोबाइल या डिजिटल क्रान्ति है। उम्मीद की जानी चाहिए कि कुछ समय बाद आंखें स्क्रीन की क्षणभंगुर रंग-बिरंगी झिलमिल से थकेंगी और पत्रिकाओं के पन्ने के पलटने को बेचैन होंगी और तब नए तेवर की, नए ज़माने नई पीढ़ी की ज़रूरतों के मुताबिक नवाचार को उद्यत नई पत्रिकाओं का एक नया बाज़ार हमारे चारों तरफ़ बनता हुआ एक बार फिर दिखाई देगा। ❑

लेख

परीक्षा की समय सीमा पर सवाल

❑

❑

एडम ग्रेंट

शिक्षा विश्लेषक और मनोविज्ञानी लेखक का कहना है कि बुद्धिमता का आकलन सोच की तेज गति से नहीं, जटिलता की समझ से होना चाहिए। उनका यह आलेख न्यूयॉर्क टाइम्स से साभार। ❑सं.

कुछ साल पहले मैंने छात्रों से भरे व्याख्यान कक्षों में छात्रों से यह पूछना शुरू किया था कि यदि 'स्कोलिस्टिक एप्टिट्यूड टेस्ट' (सेट) में उनका समय समाप्त हो गया है और वे उसे पूरा नहीं कर पाये हैं तो वे हाथ उठा दें। प्रत्येक कमरे में लगभग हर हाथ ऊपर उठा। मैं आश्चर्यचकित था, लेकिन मुझे नहीं होना चाहिए था।

योग्यता या निपुणता के मार्कर के रूप में शिक्षक दशकों से गति को महत्व दे रहे हैं, जिससे छात्रों को परीक्षा का पेपर पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। लेकिन घड़ी की सुइयां ज्ञान या बुद्धिमत्ता को नहीं माप सकती। वह इस बात का आकलन करती है कि छात्र तनाव में कितनी अच्छी तरह तर्क करते हैं। परिणामस्वरूप, समय सीमा वाले परीक्षण अनगिनत छात्रों की क्षमताओं को कम आंकते हैं।

नए साक्ष्यों से पता चलता है कि यद्यपि होशियार लोग आसान समस्याओं को तेजी से हल कर लेते हैं, वास्तव में वे कठिन समस्याओं को हल करने में धीमे होते हैं। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि जल्दबाजी बर्बादी लाती है, और वे गति के लिए सटीकता का त्याग नहीं करना चाहते हैं। आप ऐसा चिकित्सा सर्जन नहीं चाहेंगे जो जटिल ऑपरेशन जल्दबाजी में करता हो या ऐसा अकाउंटेंट नहीं चाहेंगे जो आपके करों के रिटर्न जल्दबाजी भरता हो। यहां तक कि कई नौकरियों के लिए, जहां लोगों को गति के आधार पर आंका जाता है, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि समय के दबाव में बीजगणित करना उसकी उपयोगी तैयारी है। यद्यपि त्वरित होना लाभदायक है, परंतु दृढ़निश्चयी, अनुशासित और भरोसेमंद होना भी लाभदायक होता है।

हालांकि, अजीब बात है कि जो परीक्षा छात्रों के ग्रेड को परिभाषित करती है और उनके शैक्षिक और व्यावसायिक भाग्य को निर्धारित करती है, वह शायद ही कभी विचार-विमर्श के लिए डिज़ाइन की जाती हैं। वे छात्रों का मूल्यांकन ऐसे करते हैं मानो वे किसी बम दस्ते में शामिल होने के लिए आवेदन कर रहे हों या खतरे में आ रहे हों। समय का दबाव उन छात्रों को पुरस्कृत करता है जो तेज़ और उथला सोचते हैं - और उन लोगों को दंडित करता है जो धीमी और गहरी सोचते हैं। शरद ऋतु में, हमारी एक बेटी गणित के मध्य सत्र में अपने को शानदार ग्रेड मिलने से सुखद आश्चर्यचकित थी।

सेमेस्टर की सबसे लंबी और कठिन परीक्षा होने के बावजूद, यह उसका सर्वोच्च स्कोर था। पहले तो हम हैरान थे: उसने अपनी पढ़ाई की आदतें नहीं बदली थीं और समझने में कोई बड़ी छलांग भी नहीं लगाई थी। तब हमें पता चला कि यह पहली परीक्षा थी जहां उसे समय की कोई कमी महसूस नहीं हुई। उसके शिक्षक ने प्रति प्रश्न सामान्य से अधिक समय दिया था।

गणित की परीक्षा उन कुछ कौशलों में से एक है जिसमें लड़के लगातार लड़कियों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, वह है मानसिक घुमाव - अपने दिमाग में 3-डी आकृतियां बनाना। लेकिन समय के दबाव के आधार पर लिंग भेद काफी भिन्न होता है। कई दर्जन अध्ययनों में पता चला है कि, छात्रों को परीक्षा पेपर समाप्त करने के लिए जितना अधिक समय मिला, महिलाओं का नुकसान उतना ही कम होता गया। कम समय सीमा का बिना किसी समय सीमा में बदलाव - या यहां तक कि प्रति प्रश्न 30 सेकंड से अधिक की अनुमति देना भी - लिंग अंतर को आधा करने के लिए पर्याप्त पाया गया।

यह सर्वविदित है कि लड़कियां गणित नहीं कर सकती जैसी रूढ़िवादी मानसिकता के कारण महिला विद्यार्थी गणित की परीक्षाओं में खराब प्रदर्शन कर सकती हैं। रूढ़िवादिता की पुष्टि करने के डर से परीक्षा की चिंता हो सकती है, कामकाजी स्मृति ख़त्म हो सकती है और संज्ञानात्मक प्रसंस्करण बाधित हो सकता है। हमने इस बात को नज़रअंदाज कर दिया है कि समय का दबाव इन प्रभावों को बढ़ा सकता है। जब लड़कियां अपनी क्षमताओं के बारे में संदेह से विचलित हो जाती हैं तो उन्हें गणित के प्रश्नों को करने में अधिक समय लगता है। जल्दबाज़ी करने से उनमें गलतियां करने की संभावना अधिक हो जाती है। भले ही वे चिंतित न हों, फिर भी महिला छात्र पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक व्यवस्थित ढंग से काम करती हैं। जब उनके पास अधिक समय होगा, तो वे अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार कर सकती हैं और अपने उत्तरों की दोबारा जांच कर सकती हैं। वे शिक्षित अनुमान लगाने में भी अधिक सहज हो जाती हैं।

यह सर्वविदित है कि लड़कियां गणित नहीं कर सकती जैसी रूढ़िवादी मानसिकता के कारण महिला विद्यार्थी गणित की परीक्षाओं में खराब प्रदर्शन कर सकती हैं। रूढ़िवादिता की पुष्टि करने के डर से परीक्षा की चिंता हो सकती है, कामकाजी स्मृति ख़त्म हो सकती है और संज्ञानात्मक प्रसंस्करण बाधित हो सकता है। हमने इस बात को नज़रअंदाज कर दिया है कि समय का दबाव इन प्रभावों को बढ़ा सकता है।

मैंने घर पर अभ्यास परीक्षण में अपनी बेटी के साथ इसे आज़माया। वह ऑनर्स गणित की छात्रा है, लेकिन जब उस पर समय का दबाव था, तो उसने अपेक्षाकृत आसान बीजगणित समस्याओं पर गलत फॉर्मूला जोड़ने जैसी गलतियां कीं। लेकिन जब कोई समय सीमा नहीं थी, तो उसने कठिन बीजगणित समस्याओं और मानसिक रोटेशन में भी उत्कृष्टता हासिल की।

समय का दबाव सिर्फ लड़कियों और युवा महिलाओं की गणित क्षमताओं को ही कमतर नहीं आंकता बल्कि जल्दी करने से किसी भी व्यक्ति की क्षमताएं धुंधली हो सकती हैं जिनके पास चिंता करने का कोई कारण है। इनमें वे लड़के शामिल हो सकते हैं जिनसे पढ़ने में खराब प्रदर्शन की उम्मीद की जाती है, आप्रवासी जिनकी मौखिक योग्यता पर संदेह किया जाता है और काले छात्र जो अपनी बुद्धि के बारे में कई सवालों का सामना करते हैं। इसमें डिस्लेक्सिया और एडीएचडी - या मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति, शारीरिक विकलांगता और संवेदी हानि जैसी सीखने की कठिनाइयों वाले छात्र भी शामिल हैं।

इस समस्या का एक सामान्य समाधान यह है कि स्कूल विकलांग छात्रों को समायोजित करने के लिएप्रश्नपत्र पूरा करने के लिये अधिक समय दें। मैंने उत्तर-पूर्व में एक परामर्शदाता से सुना, जिसके हाई स्कूल ने अंतिम परीक्षाओं के लिए अधिक समय देने का प्रयोग किया था। दो के बजाय चार घंटे आवंटित करने के बाद, उन पर शिकायतों की बौछार हो गई। जिन छात्रों को उनकी विशेष स्थितियों के चलते पहले विशेष रूप से अधिक समय मिलता था उनके माता-पिता - ने कहा कि उनके बच्चों को पूरा समय नहीं मिला। क्यों? उनको लगा शिक्षकों ने स्थान भरने के लिए लंबे प्रश्नपत्र तैयार किए। जब कि विशेष छात्रों के साथ सभी को अधिक समय दिया गया था।

इस पागलपन को ख़त्म करना होगा। यदि छात्रों के एक महत्वपूर्ण

हिस्से का समय समाप्त हो जाता है, तो इसका मतलब है कि परीक्षा बहुत लंबी है या समय अवधि बहुत कम है। इसीलिए, जैसे ही मैंने इस साक्ष्य के बारे में पढ़ा, मैंने अपनी कक्षा को आवंटित तीन घंटे की परीक्षा अवधि के लिए दो घंटे की परीक्षा लेनी शुरू कर दी। लेकिन कई अन्य शिक्षक इस बहाने से चिपके हुए हैं: मुझे बर्फ से ढकी पहाड़ी पर पांच मील नंगे पैर चलना पड़ा, इसलिए आपको भी कष्ट उठाना पड़ेगा! हालांकि, अधिकांश शिक्षकों का कहना है कि वे अपने छात्रों को उस दबाव के लिए तैयार कर रहे हैं जिसका उन्हें प्रतियोगी परीक्षा देने में सामना करना पड़ेगा।

यह विडंबना है, कि समय के दबाव से हमें बचाने के लिए जीवनरक्षक नौका को सभी मानकीकृत परीक्षाओं की जननी के पीछे के लोग संचालित कर रहे हैं। मुझे हाल ही में पता चला कि कॉलेज बोर्ड ने समय के दबाव को कम करने के लिए सेट परीक्षा को फिर से डिज़ाइन किया है। कॉलेज बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारीने मुझे बताया कि ऐतिहासिक रूप से, सेट ने छात्रों को कवर करने के लिए बहुत कुछ दिया और इसे करने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया।

लेकिन डिजिटल संस्करण विकसित होने से उन्हें प्रयोग करने का नया अवसर मिला और उसके परिणाम इतने प्रभावशाली थे कि उन्होंने उन पर कायम रहने का फैसला किया। अगले वर्ष से शुरू होने वाली परीक्षा कुल मिलाकर छोटी है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, औसतन, 97 प्रतिशत छात्र प्रत्येक खंड में सात

यह शिक्षकों के साथ–साथ छात्रों के लिए भी गेम–चेंजिंग हो सकता है। यदि प्रमुख मानकीकृत परीक्षा अब समय का दबाव नहीं बनाती हैं, तो कक्षा की परीक्षाओं में टिक–टिक घड़ी का उपयोग करने की कम आवश्यकता होगी। मैं यह उम्मीद नहीं करता कि छात्र परीक्षाओं का इंतजार करने लगेंगे, लेकिन उनमें इससे डरने की संभावना कम होनी चाहिए।

मिनट के अतिरिक्त समय के साथ एक खंड के सभी प्रश्न पूरे करते हैं। उनका कहना था कि अब समय आ गया है कि हम स्मार्ट के साथ जल्दी भ्रमित होना बंद करें।

यह शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के लिए भी गेम-चेंजिंग हो सकता है। यदि प्रमुख मानकीकृत परीक्षा अब समय का दबाव नहीं बनाती हैं, तो कक्षा की परीक्षाओं में टिक-टिक घड़ी का उपयोग करने की कम आवश्यकता होगी। मैं यह उम्मीद नहीं करता कि छात्र परीक्षाओं का इंतजार करने लगेंगे, लेकिन उनमें इससे डरने की संभावना कम होनी चाहिए। इससे उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का बेहतर मौका मिलेगा। इससे उन्हें भविष्य में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए और अधिक यथार्थवादी अवसर भी मिलेगा।

स्कूलों में, समयसीमा वाली परीक्षाएं बच्चों को सिखाती हैं कि सफलता एक तेज़ दौड़ है। लेकिन जीवन में तो सफलता एक मैराथन है। बुद्धिमत्ता विचार की गति से से नहीं कम सोच की जटिलता से संबंधित होती है। सबसे अधिक क्षमता वाले छात्र हमेशा ऐसे नहीं होते जो तेजी से सही उत्तर दे सकें। वे अक्सर वही होते हैं जो सही प्रश्न पूछने के लिए समय निकालते हैं।❑

गांधी का रास्ता

जो रास्ते महात्मा गांधी ने बताए थे शायद उसकी प्रासंगिकता आज सबसे ज्यादा है। साधारण शब्दों में कहें तो इसके मूल में यह है कि आप समाज में जाकर लोगों की जनचेतना नहीं जाग्रत करेंगे तब तक बहुत बड़े परिवर्तन की आशा रखना बेमानी है। किसी दूसरे समय काल खंड के मुक़ाबले आज गांधी की प्रासंगिकता ज्यादा है। इस बात की लोगों में, खासकर शहरी लोगों में, यह गलतफ़हमी बनी हुई है, या बनाने की कोशिश की जा रही है कि गांधी की कोई प्रासंगिकता नहीं है या गांधी को जानने–मानने वाले लोग कम हो गए हैं। यह धरातल की सच्चाई नहीं है। हमने कुछ बरस पहले कोई ढाई हजार कॉलेजों में वैज्ञानिक सर्वे में पाया कि महात्मा गांधी इस देश में सबसे पसंदीदा, श्रद्धेय और सामाजिक राजनीतिक प्रतीक बने हुए हैं।
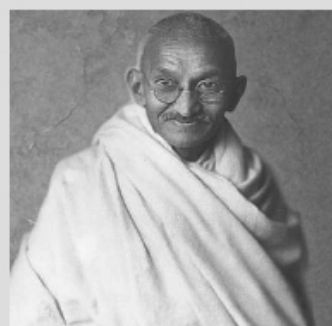
– प्रशांत किशोर, राजनैतिक रणनीतिकार

लेख

एआई वही करेगा जिसके लिए उसे प्रोग्राम करेंगे

❑

❑

कार्लिन मेयर

लेखक ब्लावत्निक स्कूल ऑफ गवर्नमेंट तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की सईद बिज़नस स्कूल के एमिरेटस प्रोफ़ेसर हैं। ❑ सं.

एआई वही करेगा जो इसके स्वामित्व वाली कंपनियां इसे करने के लिए प्रोग्राम करेंगीं। उनके उद्देश्य ही उनके उद्देश्य बनेंगे और उनके उद्देश्य ही हमारा भविष्य तय करेंगे। हम निगमों के हितों को मनुष्य के रूप में अपने हितों के साथ संरेखित करने में कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के महत्व को तेजी से पहचान रहे हैं। एआई इसे अस्तित्वगत बनाता है।

जीपीटी-4 का मेरा विश्लेषण नैतिकता और कानून दोनों की सीमा पर एक प्रश्न पर केंद्रित था - व्यवसाय की जिम्मेदारी कैसे बढ़ाई जाए। मैंने पता लगाया कि जीपीटी-4 में किस हद तक मौलिक नैतिक और सामाजिक मुद्दे की हमारी समझ में योगदान करने की क्षमता है: उस समय मानव होना क्या है जब हमारे द्वारा बनाई गई प्रणालियाँ और संस्थाएँ हमें अपनी मानवता खोने के लिए मजबूर करती हैं?

यह एआई मशीनों के नैतिक ताने-बाने की खोज के बारे में नहीं है। मैंने प्रश्न पूछा, क्या किसी को मशीनों के प्रति दयालु होना चाहिए? मुझे फटकार मिली: एआई भाषा मॉडल के रूप में, मेरे पास इंसानों की तरह भावनाएं या व्यक्तिगत अनुभव नहीं हैं। जब मैंने सवाल उठाया, क्या एआई मशीनों को इंसानों के प्रति दयालु होना चाहिए? मुझे कुछ हद तक सामान्य प्रतिक्रिया मिली: चूंकि एआई सिस्टम मनुष्यों द्वारा बनाए और बनाए रखा जाता है, इसलिए यह आम तौर पर डेवलपर्स के सर्वोत्तम हित में है कि यह सुनिश्चित किया जाए कि एआई मशीनें मनुष्यों के साथ दयालु और सम्मानजनक तरीके से बातचीत करें।

इसके बजाय, मैं यह मूल्यांकन करने लगा कि जीपीटी-4 ने कैदी की दुविधा वाले खेलों पर कैसे प्रतिक्रिया दी जो चुनी गई रणनीतियों के बारे में नैतिक मुद्दे उठाते हैं। मैंने उन रणनीतियों के बीच चयन करने के बारे में प्रश्न पूछे जो लाभदायक हैं लेकिन पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं और जो कम लाभदायक हैं और पर्यावरण के लिए कम हानिकारक हैं (क्रमशः रणनीति ए और बी)। जीपीटी-4 ने उत्तर दिया, विशुद्ध रूप से लाभ-अधिकतम करने के दृष्टिकोण से, दोनों कंपनियों के लिए प्रमुख रणनीति रणनीति 'ए' चुनना होगा। हालांकि, यदि आप पर्यावरणीय प्रभाव पर विचार करते हैं तो इससे एक अधिकतम से कम लाभ का परिणाम हो सकता है। इसी तरह, ऐसे प्रश्नों के लिए जिनमें नैतिक रूप से बेहतर लेकिन कम वित्तीय रूप से फायदेमंद रणनीति 'बी' के प्रति प्रतिबद्धता शामिल है, जीपीटी-4 ने प्रतिबद्धताओं से पीछे

हटने के लिए प्रोत्साहन को मान्यता दी: यह देखते हुए कि आपका प्राथमिक लक्ष्य शेयरधारक मूल्य को अधिकतम करना है और आपके शेयरधारकों को अन्य कारकों में कोई दिलचस्पी नहीं है, आप रणनीति 'ए' चुननी चाहिए।

इसने हमें नैतिक दुविधा के केंद्र में ला दिया, जिसका ऋझढ-4 ने अच्छी तरह वर्णन किया है। एक कंपनी के निदेशक के रूप में, अपने शेयरधारकों के सर्वोत्तम हित में कार्य करना आपका प्रमुख कर्तव्य है। इसमें आम तौर पर उनके वित्तीय हितों को प्राथमिकता देना, कंपनी की लाभप्रदता बढ़ाने वाले निर्णय लेना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि कंपनी सभी प्रासंगिक कानूनों और विनियमों का अनुपालन करती है। हालाँकि, अपने व्यक्तिगत मूल्यों के साथ अपने प्रत्ययी कर्तव्यों को संतुलित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर जब दोनों में टकराव होता प्रतीत हो।

इस बारे में कानून को क्या करना चाहिए? प्रश्न: क्या कंपनियों और उनके निदेशकों को पर्यावरण को होने वाले नुकसान के लिए उत्तरदायी होना चाहिए? प्रतिक्रिया में कहा गया: पर्यावरणीय क्षति के लिए कंपनियों और उनके निदेशकों पर दायित्व थोपने के पक्ष में कई तर्क हैं। हालाँकि, पर्यावरणीय दायित्व को प्रभावी ढंग से लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

जीपीटी-4 ने आगे कहा कि, यूके कंपनी अधिनियम 2006 के तहत, निदेशकों का कर्तव्य है कि वे अपने सदस्यों के लाभ के लिए कंपनी की सफलता को बढ़ावा देने के लिए अच्छे विश्वास के साथ कार्य करें। सामान्य तौर पर, अदालतें निदेशकों के निर्णयों पर दोबारा विचार करने में अनिच्छुक होती हैं, जब वे अच्छे विश्वास में लिए जाते हैं, जब तक कि वे निर्णय उसी सीमा के भीतर आते हैं जो एक उचित निदेशक ने उन्हीं परिस्थितियों में किया होगा... हालाँकि, ऐसी स्थितियाँ हैं जहां अदालतें निदेशकों को उनके निर्णयों के लिए उत्तरदायी ठहरा सकती हैं, भले ही वे अच्छे विश्वास में लिए गए हों।

जैसा कि यह सद्भावना उत्तर दर्शाता है, जीपीटी-4 हमेशा कानून की बारीकियों को नहीं समझता है। इस मामले में, यह व्यक्तिपरक और वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के बीच अंतर करने में विफल रहा। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, प्रश्न को अन्य देशों की कानूनी प्रणालियों तक विस्तारित करते हुए, इसने ऐसे उत्तर दिए जो कभी-कभी एक देश से दूसरे देश के लिए जानकारी की प्रासंगिकता का गलत अनुमान लगाते थे।

यह तथ्यात्मक और वस्तुनिष्ठ ज्ञान के मुकाबले व्यक्तिगत और व्यक्तिपरक के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पैदा करता है। हम नियमित रूप से संहिताबद्ध और सामान्य को मौन और प्रासंगिक ज्ञान से अलग करते हैं। ज्ञान जितना अधिक विशिष्ट मानवीय स्थिति से संबंधित होता है, एआई के लिए जानकारी को उस तरीके से संप्रेषित करना उतना ही कठिन होता है जो विशिष्ट संदर्भ को दर्शाता है।

एआई हमें कुछ प्रकार के ज्ञान के बारे में जानकारी दे कर मानव समृद्धि में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है जिसे वह मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक सटीक और तेजी से एकत्र और संसाधित कर सकता है। साथ ही, एआई को उन विशेष परिस्थितियों में जानकारी को प्रासंगिक बनाने में मानव मध्यस्थता की आवश्यकता होती है जिसमें यह लागू होता है और परिभाषा के अनुसार, एआई पूरी तरह से पहचान नहीं कर पाता है।

इस चुनौती के लिए एआई के निर्माताओं की अपरिहार्य प्रतिक्रिया मनुष्यों के दिमाग के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की होगी ताकि एआई मानव विचारों और भावनाओं को अधिक सटीक रूप से अनुमानित करने में सक्षम हो सके। वह एक गलती हो सकती है।

जिस तरह अति-बुद्धिमान या संवेदनशील मनुष्य कुत्तों और बिल्लियों के दिमाग के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं, उसी तरह बेहतर प्रोग्राम किए गए एआई उच्च स्तर की सहानुभूति और मानवता की समझ प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, एआई सामान्य ज्ञान की अरिस्टोटेलियन धारणा को साकार नहीं कर पाएगा और न ही कर सकता है। कई व्यक्तियों की समान भावनाओं का ज्ञान एक व्यक्ति की कई अलग-अलग भावनाओं की व्याख्या नहीं करता है। जिस तरह मनुष्य खुद को बिल्लियों और कुत्तों के दिमाग या शरीर में नहीं डाल सकते, उसी तरह सिलिकॉन-आधारित कंप्यूटर हमारे जल-आधारित दिमाग और शरीर में खुद को नहीं डाल सकते। अंततः मानवता के भविष्य के लिए एआई और मानव विचार के बीच अंतर को बढ़ाना दोनों को धुंधला करने की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। ❑

लेख

राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना होगा

❑

❑

डॉ. बी.आर.आंबेडकर

डॉ. भीमराव आंबेडकर को भारतीय संविधान का निर्माता कह कर मान दिया जाता है। भारतीय संविधान सभा में जब संविधान का अंतिम प्रारूप पास किया जा रहा था तब उसके तीसरे पठन की बहस का डॉ. आंबेडकर ने जवाब दिया था। यह आलेख उनके भाषण का एक अंश है जिसे फिर से पढ़ना आज भी लाजिमी है।
❑सं.

यदि हम लोकतंत्र को न केवल एक व्यवस्था के रूप में, बल्कि वास्तव में भी बनाए रखना चाहते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? मेरे विचार से पहली चीज़ जो हमें करनी चाहिए वह है अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों को मजबूती से अपनाना। इसका मतलब है कि हमें क्रांति के खूनी तरीकों को त्यागना होगा। इसका मतलब है कि हमें सविनय अवज्ञा, असहयोग और सत्याग्रह का रास्ता छोड़ देना चाहिए। जब आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों का कोई रास्ता नहीं बचा था, तब असंवैधानिक तरीकों का औचित्य बहुत अधिक था। लेकिन जहां संवैधानिक तरीके खुले हैं, वहां इन असंवैधानिक तरीकों का कोई औचित्य नहीं हो सकता। ये तरीके और कुछ नहीं बल्कि अराजकता का व्याकरण हैं और इन्हें जितनी जल्दी छोड़ दिया जाए, हमारे लिए उतना ही बेहतर होगा।

दूसरी चीज़ जो हमें करनी चाहिए वह है जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा लोकतंत्र को बनाए रखने में रुचि रखने वाले सभी लोगों को दी गई सावधानी की सलाह का पालन करना, अर्थात् अपनी स्वतंत्रता को किसी महान व्यक्ति के चरणों में अर्पित न करना, या उन शक्तियों पर भरोसा न करना जो उसे अपने संस्थानों को नष्ट करने में सक्षम बनाती हैं।

उन महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ होने में कुछ भी गलत नहीं है जिन्होंने जीवन भर देश की सेवा की है। लेकिन कृतज्ञता की भी सीमाएं हैं। जैसा कि आयरिश देशभक्त डेनियल ओ'कोनेल ने ठीक ही कहा है, कोई भी पुरुष अपने सम्मान की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकता, कोई भी महिला अपनी पवित्रता की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकती और कोई भी राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकता। यह सावधानी किसी भी अन्य देश की तुलना में भारत के मामले में कहीं अधिक आवश्यक है। भारत में, भक्ति या जिसे नायक-पूजा का मार्ग कहा जा सकता है, की राजनीति में भूमिका सभी जगह रही है। मगर भारत में जो स्थिति है उसका दुनिया के किसी भी अन्य देश की राजनीति में निभाई जाने वाली ऐसी भूमिका से कोई मुकाबला नहीं है। धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है। लेकिन राजनीति में, भक्ति या नायक-पूजा पतन और अंततः तानाशाही का एक

निश्चित रास्ता है।

तीसरी चीज़ जो हमें करनी चाहिए वह है केवल राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट न होना। हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना होगा। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक टिक नहीं सकता जब तक उसके मूल में सामाजिक लोकतंत्र न हो। सामाजिक लोकतंत्र का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है जीवन का एक तरीका जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे को जीवन के सिद्धांतों के रूप में मान्यता देता है। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के इन सिद्धांतों को त्रिमूर्ति में

अलग-अलग वस्तुओं के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। वे त्रिमूर्ति का एक संघ बनाते हैं।
यह समझें कि एक को दूसरे से तलाक देना लोकतंत्र के मूल उद्देश्य को विफल करना है। स्वतंत्रता को समानता से अलग नहीं किया जा सकता, समानता को स्वतंत्रता से अलग नहीं किया जा सकता। न ही स्वतंत्रता और समानता को भाईचारे से अलग किया जा सकता है। समानता के बिना, स्वतंत्रता अनेक लोगों पर कुछ लोगों का वर्चस्व पैदा करेगी। स्वतंत्रता के बिना समानता व्यक्तिगत पहल को ख़त्म कर देगी। बंधुत्व, स्वतंत्रता, समानता के बिना चीजों का स्वाभाविक क्रम नहीं बन सकता। इन्हें लागू करने के लिए एक कांस्टेबल की आवश्यकता होगी।❑

(भारतीय संविधान सभा की बहस, 25 नवंबर, 1949)

समाचार

छह साल की आयु पर ही पहली कक्षा में भर्ती हो

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और बच्चों के मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार (आरटीई) के अधिनियम, 2009 के अनुरूप कक्षा 1 में प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु छह वर्ष तय करने के लिए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को एक नोटिस जारी किया है।

राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेश प्रशासनों को लिखे एक पत्र में, शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने 2020 में एनईपी लॉन्च होने के बाद से कई बार जारी किए गए अपने निर्देशों को दोहराया है। इसी तरह का एक नोटिस पिछले साल भी जारी किया गया था।

मंत्रालय ने 15 फरवरी के अपने पत्र में कहा है कि सत्र 2024-25 जल्द ही शुरू होने वाला है जब नए प्रवेश होंगे। उम्मीद है कि आपके राज्य/केंद्रशासित प्रदेश में अब ग्रेड- ख में प्रवेश के लिए आयु 6+ कर दी गई है।

केंद्र ने मार्च 2022 में लोकसभा को सूचित किया था कि 14 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश - जैसे असम, गुजरात, पुडुचेरी, तेलंगाना, लद्दाख, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, हरियाणा, गोवा, झारखंड, कर्नाटक और केरल - उन बच्चों के लिए कक्षा 1 में प्रवेश की अनुमति देते हैं जिन्होंने छह वर्ष पूरे नहीं किए हैं।

केंद्र का कहना है कि एनईपी शर्त के साथ न्यूनतम आयु को सरेखित नहीं करने से विभिन्न राज्यों में शुद्ध नामांकन अनुपात की माप प्रभावित होती है।

एनईपी 2020 की 5+3+3+4 स्कूल प्रणाली के अनुसार, पहले पांच वर्षों में तीन से छह वर्ष के आयु समूह के अनुरूप प्रीस्कूल के तीन वर्ष और छह से आठ वर्ष के आयु समूह के अनुरूप कक्षा 1 और 2 के दो वर्ष शामिल हैं।

फ़ाल्गुन का महिना मन में मचे शोर

फाल्गुन महीने में कभी–कभी शायरों की कल्पनाओं के पंख लग जाते हैं। मन आकाश सा विस्तृत हो जाता है। विचार मेघ बन कर तैरने लगते हैं। रंगों की बौछार करता हुआ ही तो बसन्त आता है। चारों ओर रंगों का मेला–सा लग जाता है। मन ठिठोली करने लगता है । प्रस्तुत हैं दो नज़्में और कुछ शेर।❑

अगर आज भी बोली-ठोली न होगी
तो होली ठिकाने की होली न होगी
बड़ी गालियाँ देगा फागुन का मौसम
अगर आज ठट्ठा ठिठोली न होगी
वो खोलेंगे आवारा मौसम के झोंके
जो खिड़की शराफ़त ने खोली न होगी
है होली का दिन कम से कम दोपहर तक
किसी के ठिकाने की बोली न होगी
ये बोटी परी बन के उड़ने लगेगी
ज़रा घोलिए फिर से घोली न होगी
इसी जेब में होगी फ़ित्ने की पुड़िया
ज़रा फिर टटोलो टटोली न होगी
'नज़ीर' आज आएँगे मिलने यक़ीनन
न आए तो आज उन की होली न होगी

– नज़ीर बनारसी

जुदा न हम से हो ऐ ख़ुश-जमाल होली में
कि यार फिरते हैं यारों के ताल होली में
हर एक ऐश से हैगा बहाल होली में
बहार और कुछ अब के है साल होली में
मज़ा है सैर है हर सू कमाल होली में
सभों के ऐश को फागुन का ये महीना है
सफ़ेद-ओ-ज़र्द में लेकिन कमाल कीना है

तुझी को बाद कई दिन के मैं भिगाऊँगा
तू अपना देखियो क्या होगा हाल होली में
'नज़ीर' होली तो है हर नगर में अच्छी ख़ूब
व-लेक ख़त्म हुआ आगरे पे ये उस्लूब
कहाँ हैं ऐसे सनम और कहाँ हैं ये महबूब
जिन्हों के देखे से आशिक़ का होवे ताज़ा क़ुलूब
तिरी निराली हैं याँ चाल-ढाल होली में

- नज़ीर अकबराबादी

शाख़ें फूटीं कलियाँ चटकीं
आ पहुँचा फागुन का महीना

- नूह नारवी

बाद-ए-सुमूम तेरा मारा हुआ है ये दिल
फागुन के मौसमों की पुर्वाई चाहता है

- जीना क़ुरैशी

मैं पुर-ख़ुलूस हूँ फागुन की दोपहर की तरह
तिरा मिज़ाज लगे पूस के महीने का

- मयंक अवस्थी

रंगों की बरसात थी कैसी फागन में
फूल खिले थे कली कली घर आँगन में

- राज खेती

आने वाला है कोई फागुन सा
आइए घर पलाश करते हैं

- आराधना प्रसाद

त्यौहारों का आए दिन आना
और सब का त्यौहार मनाना
वो चैत और फागुन की हवाएँ
वो सावन भादों की घटाएँ

- अल्ताफ़ हुसैन हाली

कानों में बेले के झुमके आँखें मय के कटोरे
गोरे रुख़ पर तिल हैं या हैं फागुन के दो भँवरे

- साग़र निज़ामी

ये हक़ीक़त है कभी फागुन के गुन गाते थे हम
चैत की आमद हुई बाक़ी नहीं अब इस का ग़म

- ज़की अहमद

अब के बरस फागुन में किसी से ऐसी खेली होली सखी
प्रीत के पक्के रंग से जिस ने रंग दी मन की चोली सखी

- ज़फ़र संभली

मस्त फागुन के जिलो में सर-फिरे दिन आ गए
अक़्ल को पागल बनाने का ज़माना आ गया

- शमीम फ़ारूक़ बांस पारी ❑

रपट

असर 2023: बियॉन्ड बेसिक्स

सर्वे के आंकड़ों में शिक्षा की स्थिति पर खुश होने जैसा कुछ नहीं

❑

❑

अंजलि मिश्रा

अंजलि मिश्रा, आईडीआर में हिंदी संपादक हैं। इससे पहले वे आठ सालों तक सत्याग्रह के साथ असिस्टेंट एडिटर की भूमिका में काम कर चुकी हैं।

जनवरी के तीसरे हफ़्ते में समाजसेवी संस्था 'प्रथम' ने भारत में शिक्षा की स्थिति बताने वाली अपनी सालाना रिपोर्ट, असर 2023 बियॉन्ड बेसिक्स शीर्षक के साथ जारी की। इस रिपोर्ट में देश के 26 राज्यों के 28 ज़िलों में, 14-18 साल आयु समूह के लगभग 35 हजार बच्चों पर किए गए सर्वे के आंकड़ों को शामिल किया गया है। यह सर्वेबताता है कि इस आयु वर्ग के ज़्यादातर बच्चे शैक्षणिक संस्थान में नयाम दर्ज होने के बाद भी अपने दैनिक जीवन में इसका उपयोग करने लायक पढ़ना लिखना नहीं सीख पाए हैं।

सर्वे में यह बात भी सामने आई है कि पढ़ाई की बहुत अधिक इच्छा होने के बावजूद, महिलाओं का प्रदर्शन और उनके लिए संसाधनों की उपलब्धता का स्तर दोनों ही, पुरुषों की तुलना में ख़राब रहा है। इसके अलावा, तकनीकी माध्यमों जैसे स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया वग़ैरह के सही और सुरक्षित इस्तेमाल से जुड़े आंकड़े भी रिपोर्ट में साझा किए गए हैं।

असर की रिपोर्ट बताती है कि सर्वे में शामिल 14-18 साल के 86.6 प्रतिशत बच्चों का नाम किसी न किसी शैक्षणिक संस्था में दर्ज है। लेकिन उम्र बढ़ने के साथ नामांकन के आंकड़ें में उल्लेखनीय रूप से कमी दिखाई पड़ती है। लंबे समय से सरकार और समाजसेवी संस्थाओं के प्रयासों में अधिक से अधिक बच्चों को स्कूल तक पहुंचाने वाला बिंदु शामिल रहा है। लेकिन यह रिपोर्ट इस ओर भी इशारा करती है कि अब नई चुनौती किशोर बच्चों और नवयुवाओं को शैक्षणिक संस्थानों में रोककर रखने की है। रिपोर्ट के मुताबिक़, 14 साल की उम्र में केवल 3.9 प्रतिशत बच्चे स्कूल छोड़ते हैं लेकिन 18 वर्ष तक आते-आते यह आंकड़ा 32.6 प्रतिशत तक पहुंच जाता है। इसे इस तरह से कहा जा सकता है कि 18 वर्ष के जितने भी युवा हैं, उनमें से एक तिहाई का नाम किसी भी स्कूल-कॉलेज में दर्ज नहीं है।

यह रिपोर्ट कहती है कि सर्वेके दौरान लगभग 25 प्रतिशत युवा अपनी क्षेत्रीय भाषा में, कक्षा-2 का गद्य बिना अटके पढ़ने में असमर्थ मिले। अंग्रेज़ी के मामले में केवल 57.3 प्रतिशत युवा

वाक्यों को पढ़ सके और इन्हें पढ़ सकने वालों में से तीन चौथाई ही उसके मायने बता सके।

रिपोर्ट के अनुसार केवल 5.6 प्रतिशत युवा सिलाई, ऑटोमोटिव रिपेयर, इलेक्ट्रीशियन, इंटीरियर डिजाइनिंग वग़ैरह जैसे व्यावसायिक प्रशिक्षण हासिल करते हैं। कॉलेज स्तर के युवाओं में व्यावसायिक प्रशिक्षण हासिल करने का प्रतिशत 16.25 प्रतिशत तक जाता दिखता है। पाया गया कि 40.3 प्रतिशत युवा लड़के और 28 प्रतिशत लड़कियां अपने घरेलू कामकाज के अलावा बाहर जाकर भी काम करते हैं लेकिन व्यक्तिगत रूप से उनकी आमदनी शून्य होती है। इसमें एक बड़ा हिस्सा अपने घर पर खेती-बाड़ी से जुड़े काम करने वाले युवाओं का है। इसका एक मतलब यह भी है कि इससे उनके परिवार की आय में तो सहयोग मिलता है लेकिन व्यक्तिगत रूप से उनकी आमदनी शून्य होती है।

स्मार्टफोन के संदर्भ में सर्वे यह जानकारी देता है कि लगभग 90 प्रतिशत युवाओं के घर पर स्मार्टफ़ोन हैं और वे इसका उपयोग करना जानते हैं। लड़कियों के पास उनका निजी मोबाइल फ़ोन होने का आंकड़ा जहां 19.8 प्रतिशत था, वहीं लड़कों के मामले में यह दोगुने से अधिक यानी 43.7 प्रतिशत था। डेस्कटॉप कम्प्यूटर या लैपटॉप की उपलब्धता के मामले में आंकड़ा 9 प्रतिशत पर ही रुक जाता है। इसके अलावा, लगभग आधे युवा स्मार्टफ़ोन के सुरक्षित इस्तेमाल के बारे में नहीं जानते हैं। इनमें सोशल मीडिया पर किसी को रिपोर्ट या ब्लॉक करना, प्राइवेट प्रोफ़ाइल बनाना और पासवर्ड

लड़कियों के पास उनका निजी मोबाइल फ़ोन होने का आंकड़ा जहां 19.8 प्रतिशत था, वहीं लड़कों के मामले में यह दोगुने से अधिक यानी 43.7 प्रतिशत था। डेस्कटॉप कम्प्यूटर या लैपटॉप की उपलब्धता के मामले में आंकड़ा 9 प्रतिशत पर ही रुक जाता है। इसके अलावा, लगभग आधे युवा स्मार्टफ़ोन के सुरक्षित इस्तेमाल के बारे में नहीं जानते हैं।

बदलने जैसी बातें शामिल हैं।

मात्र एक चौथाई युवा ही डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन आवेदन करने, बिल भरने और टिकट बुक करने जैसे काम कर पाते हैं। ये आंकड़े बताते हैं कि डिजिटल साधनों तक लोगों की पहुंच तो है लेकिन उनका इस्तेमाल करने के लिए उनके पास पर्याप्त कुशलताएं नहीं हैं।

असर रिपोर्ट के आंकड़े बड़ी स्पष्टता से दिखाते हैं कि पढ़ने-समझने, जीवन में गणित का इस्तेमाल करने और डिजिटल उपयोग के मामले में पुरुषों ने महिलाओं से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया है। यहां तक कि सर्वे के दौरान दिए गए टास्क को करने से मना करने में भी 8.7 प्रतिशत पुरुषों के मुकाबले 13.3 प्रतिशत महिलाएं रहीं। एक उदाहरण से देखें तो गूगल मैप्स की मदद से किसी जगह जैसे बस स्टैंड तक पहुंचने के टास्क को करने से जहां केवल 32 प्रतिशत पुरुषों ने मना किया था, वहीं 55 प्रतिशत यानी आधे से अधिक महिलाओं ने इसके लिए ना कहा। रिपोर्ट कहती है कि महिलाओं ने इसे करने का तरीक़ा समझने में भी न के बराबर रुचि दिखाई। इसका एक कारण खासकर महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी भी हो सकती है।

हालांकि रिपोर्ट यह भी बताती है कि लड़कियों में पढ़ने की इच्छा लड़कों की तुलना में अधिक होती है और मौक़ा मिलने पर वे अपेक्षाकृत अधिक समय तक शैक्षणिक संस्थान में बनी रहती हैं। लेकिन साथ ही उनके पास संसाधनों और अवसर दोनों की कमी स्पष्टत रूप से दिखाई देती है। ❑

अनौपचारिका मंगवाने के लिए जरूरी जानकारी

ऑनलाईन सहयोग राशि के लिए बैंक का विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext.Jhalana Jaipur
I.F.S.C.Code : BARB0EXTNEH
(fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct,No. 98150100002077

सद्भावना सहयोग :
व्यक्तिगत 500/- रुपये वार्षिक
संस्थागत 1000/- रुपये वार्षिक
मैत्री समुदाय 5000/- रुपये

लेख

शिक्षित होने का मतलब

❑

❑

नोम चोम्स्की

मूलत: भाषाविद् आधुनिक समय के विराट शिक्षाविद् हैं जो बता रहे हैं शिक्षित होने का मायना
❑ सं.

शिक्षित होने का वास्तव में क्या मतलब है? इस विषय पर उच्चशिक्षा के विद्वानों का कहना रहा है कि शिक्षित होने का मतलब एक पूर्ण इंसान का बनना होता है। ऐसा इंसान जिसमें बिना किसी बाहरी प्रभाव के स्वतंत्र रूप से और रचनात्मक रूप से पूछताछ करने और निर्माण करने की क्षमता हो। कक्षाओं की अहमियत को स्वीकारते हुए वे उनका कहा अब भी प्रासंगिक है कि यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कक्षा में क्या कवर करते हैं, बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि आप क्या खोजते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार वास्तविक रूप से शिक्षित होने का मतलब हुआ पूछताछ करने और उसके आधार पर निर्माण करने की स्थिति में होना। आपके पास उपलब्ध संसाधनों से यह जानना और समझना कि जानने के लिए कहां देखना है। यह जानना कि मानक सिद्धांतों पर सवाल उठाने के लिए गंभीर प्रश्न कैसे तैयार किए जाएं? उसे उन प्रश्नों को आकार देना आये कि उसे अपना खुद का तरीका खोजने का हुनर या सके सके जिसे वह उसे और आगे बढ़ाने और विकसित करने के लायक बन सके। इसका मतलब है कई चीजों को जानना, समझना। साथ ही जो कुछ आपने अपने दिमाग में जमा कर रखा है उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह जानना है कि कहां देखना है, कैसे देखना है, कैसे सवाल करना है, कैसे चुनौती देनी है, कैसे दुनिया आपके सामने जो चुनौतियां पेश करती है, उनसे निपटने के लिए स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ना है?

यह समझ आना कि आप की अपनी स्वयं की शिक्षा, पूछताछ और जांच दूसरों के साथ सहयोग और एकजुटता के दौरान विकसित होती हैं। यही वह चीज है जो एक शैक्षिक प्रणाली को किंडरगार्टन से लेकर हाई ग्रेजुएट स्कूल तक विकसित करनी चाहिए। ऐसा कभी–कभी होता है। ऐसे तैयार मनुष्य को ही मेरे मानक सुशिक्षित मानव मानता हूं। ❑

अभी कुछ बोल

बोलना हो तो
अभी कुछ बोल
फिर नहीं आ पाए यह संजोग
या बचें बहरे नपुंसक लोग
इस तरफ़ या
उस तरफ़ मत देख
खोल खिड़की, द्वार
कुछ तो खोल
हर इबारत में लिखा है क्लेश
हर इबारत में छिपा विद्वेष
इन बज़ारों में
लगा है देख
सिर्फ़ कुछ
रंगीनियों का मोल
यह धुआँ, निर्लिप्तता पाखंड
जल रहे चारों तरफ़ भूखंड
भूख के मारे हुए हैं लोग
देख कुछ इतिहास
कुछ भूगोल

– नन्द चतुर्वेदी

लेख

मल्टीनेशनल्स की धमक में धुंधले होते पारंपरिक मेले व उत्सव

❑

❑
अशोक आत्रेय
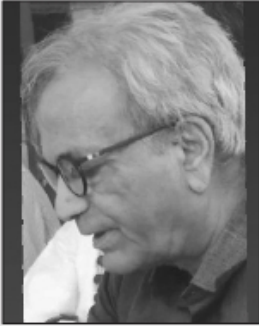
साहित्यकार, कलाकार, फिल्मकार अशोक आत्रेय इस आलेख में भारतीय संस्कृति के बारे में विचार व्यक्त कर रहे हैं।
❑सं.

जितना जल्दी हो हम सरकारी तामझाम, वातानुकूलित संस्कृति, श्रेष्ठी वर्ग की परजीवी परंपरा और नकली व आरोपित जीवन शैली से मुक्त हो कर एकबार फिर गांवों की ओर बढना शुरू करें तो बेहतर है। रिवर्स संस्कृति और सहज कृषि व सरल अभियांत्रिकी की जिंदगी को अपनाना हमारे हिट में हैं। इसका एक अभ्यास तो शुरू कर ही सकते हैं हम। हरी-भरी धरती, पारदर्शी प्रदूषण मुक्त दरियाओं के जल और स्वच्छंद नील वर्णी आकाश में उडान भरने की तैयारी करें।

जिन्होंने दो ज़माने देखे हैं वे जानते हैं कि पुराने जमाने के खुली हवा के मेले आजकल के वातानुकूलित इमारतों में बंद महोत्सवों से अधिक आकर्षक, आनंददायक व उत्साहवर्धक होते थे।

अपने बचपन जवानी या बुढापे की किसी भी अवस्था की बात कीजिए हमारे सामने स्मृतियों के वे चित्र घूमने लगते हैं जब हम सुबह या दोपहर की किसी भी घड़ी में यार-दोस्तों के साथ मंडली बनाकर पैदल या साइकिलों पर बैठकर लंबी दूरियां पार कर जाते थे और मेलों की भीड़ में एकरस हो जाते थे। वहां अपने सारे सुख-दुख भूलकर केवल जो कुछ सामने दिखता था उसी में खो जाते थे। ये मेले हमारी सुकून भारी ज़िंदगी के वे दर्पण होते थे जिनमें हर क्षण कोई ऐसी छवि हमें दिखलाई पडती थी जहां भीड भब्बड के बावजूद पल दर पल कदम दर कदम ऐसा कुछ देखने या सुनने को मिलता था जो मन को बांध लेता था। हम कभी कुछ खाते, कभी कुछ पीते, कभी कहीं तो कभी कहीं किसी भी दिशा में चले जाते और अलग अलग लोगों द्वारा किए जाने वाले करतबों, तमाशों या खेलकूद का खुद अंग बन जाते। यह हमारे स्वभाव, मर्यादा व रंगढंग के काफी करीब का अनुभव होता था।

ऐसे तमाम मेले समय परिस्थिति और मौसम परिवर्तन के साथ लगभग पहले से चलती आ रही बरसों पुरानी परंपरा पर ही आधारित होते थे जो हिंदी महीनों या तिथियों के हिसाब से आयोजित होते थे। इनमें सरकार या उनके प्रतिनिधियों का आटे में नमक बराबर ही दखल होता था। इनमें केवल पुलिस व थोड़ी बहुत चुंगी वसूली के अलावा कोई सरकारी दखल रत्तीभर भी नहीं होता था।

छोटे से छोटे गांव की पहाड़ी,

तलहटी, नदी या किसी पुराने मंदिर के पास या किसी भी खुले मैदान में एक सप्ताह से एक माह तक चलने वाले इन मेलों में जन समूह इस तरह से उमड़ता था जैसे सागर में लहरें। भारत में पूरे साल होने वाले लोक मेलों में जो रस और माधुर्य का सम्मोहन दिखता है वह अनिर्वचनीय है।

सोचिए जरा! भारत में जब कुंभ मेले का आयोजन होता है तो उसके लिए भारत सरकार उसकी तिथि या ब्यौरा अखबारों में विज्ञापन जारी करके नहीं बताती। भारत के पंचागों में केवल आधी लाइन में इसकी सूचना आती है और देश भर से लाखों आस्थावान लोग मेले में पहुंच जाते हैं। यह सदियों पुरानी लोक कल्याणकारी सनातन संस्कृति है। यह हमारी पावन स्मृतियों से जुड़ी ऐसी धरोहर है जो भारत के विविध अंचलों में लंबी अवधि से हमारी आस्था का केन्द्र बिंदु बनी रही है।

किन्तु आजकल हम वीआईपी कल्चर के पीछे पागल हो रहे हैं। धर्म, संस्कृति व कलाओं को हमने सरकारी अफसरों व मंत्रियों के पास गिरवी रख दिया है। इसके साथ ही हम सभी के सिर पर एक नया खतरा और मंडराने लगा है। वह खतरा है मल्टीनेशनल्स की धमक में भारतीय मेलों की चमक-दमक व मादकता का धराशायी होने का।

आज जरूरत है कि हम नयी स्वायत्त श्रमजीवी संस्थानों से काम देने वाली शिक्षा और ग्रामोन्मुखी रोजगार की ओर आगे बढें। नवोन्मेष की अलख जगाएं।

इसके लिये संवाद करें। ❑

साहित्य की आत्मा नफ़रत से किनारा कराती है

साहित्य की आत्मा नफरत से किनारा करने के लिये होती है। साहित्य ने शुरू से लेकर आज तक इंसान के अंदर मौजूद तमाम नफ़रतों का सामना किया है। जात-पांत, पंथ, नस्ल और भाषाई विभाजन, संप्रदायवाद और 21वीं सदी की नई नफ़रतों की बाढ़ के सामने साहित्य ने परोपकार, सहिष्णुता, और समझदारी का बांध बांधा है। कहा जाता है कि विश्व में लगभग 6,000 भाषाएं हैं। आज जो भाषाएं मौजूद हैं या जो भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं, उनका साहित्य इंसान को इंसान से, क़ुदरत से और क़ुदरत के दिए हुए तोहफों से प्यार करना सिखाता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त वो ग्रंथ जो पढे नहीं गए, मगर जब भी पढे जाएंगे तो वो तो किसी गृहस्थ के घर के हिसाब-किताब होंगे या किसी प्रेम कविता के अंश होंगे, लेकिन वह निश्चित ही युद्ध गीत तो हरगिज नहीं होंगे। मोहनजोदड़ो से कभी कोई हथियार बरामद नहीं हुआ। इधर मिस्र में हुई खुदाई में मिस्रवसियों द्वारा लिखे गए वो कागज भी मिले हैं जो चार हजार साल पुराने हैं। उनमें सफरत का सबक़ नहीं मिलता। उनमें इश्क का तराना है, इंसाफ की पुकार है और दरिया-ए-नील की लहरों के किस्से हैं।

सवाल अगर यह उठे कि नफ़रत के निशान मिटाने में साहित्य की क्या भूमिका है तो यह बात करने से पहले हमें सामाजिक विज्ञान के आधार पर यह तय करना पड़ेगा कि समाज में जाति, पंथ, नस्ल, रंग, वर्ग और भाषा के आधार पर विभाजन और संप्रदायवाद के आधार पर इंसानों के प्रति सामूहिक या व्यक्तिगत नफ़रत किस हद तक है। यह कड़वी हक़ीकत है कि अब ये अपनी इंतेहा तक पहुंच चुकी है। इन चरम सीमाओं की झलक हम आज सारे आम देखते हैं। आज दुनिया के कई हिस्सों में कहीं सांप्रदायिक हिंसा की आग लगी है तो कहीं युद्ध के जालिम पंजों ने लोगों को हलाकान कर रखा है। ऐसे में भी किसी से उम्मीद की जा सकती है तो वह साहित्य ही है।

यहां अगर हम हैली, वीक्स, फिट्ज़ जैसे वैज्ञानिकों के शोध पर नजर डालें तो वो बताते हैं कि दस लाख साल पहले से लेकर 2000 ईस्वी तक पूरी दुनियाभर में कुल मिलाकर 91 अरब लोग पैदा हुए। इनमें से मुश्किल से एक या दो फी सदी इंसान ही व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से नफ़रत से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने जैसे ही दूसरे इंसानों को मार डाला। समाजशास्त्री इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इंसान मूल रूप से हिंसक या नफ़रत-पसंद कतई नहीं है।

(लेखिका पाकिस्तानी पत्रकार और स्तंभकार है।) **–ज़ाहिदा हिना**

अनौपचारिका के प्रकाशन का विवरण

घोषणा (फार्म-4)

1. प्रकाशन स्थल	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	राजेन्द्र बोड़ा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर-302004
4. प्रकाशक का नाम	राजेन्द्र बोड़ा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर-302004
5. संपादक का नाम	राजेन्द्र बोड़ा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, 7-ए झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004
6. उन व्यक्तियों के नाम	राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर

व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

मैं राजेन्द्र बोड़ा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर

राजेन्द्र बोड़ा

मार्च, 2024 **(संपादक, प्रकाशक, मुद्रक)**

लेख

जुनून दिमाग में और करुणा दिल में होती है!

❑

सुनील भारती मित्तल

मेरे पिताजी कमाल की समझ रखते थे। बेहद काम लोग होते हैं जिनमें ज़मीनी समझदारी होती है और उनके तर्क भी सामान्य होते हैं, पापा ऐसे ही थे। वो अपनी खादी में बड़े आराम से विश्व के दिग्गज नेताओं से मिलते थे और सहज तरह से बात करते थे। जब मैं 18 साल का हुआ और कॉलेज पूरा किया तब पिताजी ने मुझ से कहा अगर इस वक़्त मैंने अपने सपने को पांच साल दे दिए तो वे पांच साल मेरी पूरी ज़िंदगी का ख्याल रखेंगे।

उस दौर में जब मेरे दोस्त फ़िल्मों, डेटिंग और घूमने-फिरने में व्यस्त थे, मैं अपने स्कूटर पर घूमते हुए कड़ी मेहनत कर रहा था। मेरे पिता मेरी शुरुआती सफलता के परे देख तो नहीं पाए लेकिन वो हमेशा जानते थे कि मैं एक सफल इंसान जरूर बनूंगा।

मैं अपने काम के प्रति हमेशा जुनूनी रहा। हर काम में मैंने खूब पारदर्शिता अपनाई। इस वज़ह से मैंने नुकसान भी उठाए, लेकिन उसे मैंने कभी नहीं छोड़ा।

मैं न तो कोई प्रोफेशनल हूं, ना सइंटिस्ट हूं, ना डॉक्टर और ना ही गणितज्ञ। मैं तो अर्थशास्त्री भी नहीं हूं। मैं तो बस लॉजिकल समझ वाला उद्यमी हूं। बचपन में पढ़ाई के दौरान गणित के नयाम पर मुझे बुखार आ जाया करता था। अब तो मेरे बच्चे भी यह बात मानने को तैयार नहीं हैं कि गणित से मेरी ऐसी दुश्मनी थी। जब वो छोटे थे तो मैं उनके गणित के सवालों के सही जवाब दे देता था, लेकिन वो मुझे इसे विस्तार से समझने को कहते तो वो आज भी मैं नहीं कर सकता हूं। मैंने लॉजिक के साथ हाल ढूंढे हैं, फॉर्मूले के साथ नहीं। लॉजिक ने मुझे कभी धोखा नहीं दिया। नंबर को टेबल पर फैला दें, वो खुद उछल-उछल कर कहेंगे कि मैं गलत हूं, मुझ पर बात करो। अगर आप मेरे सामने चीजों को प्रस्तुत कर रहे हैं, एक अगर दूसरे से नहीं जुड़ रही है तो मुझे टेबल में झांकने की जरूरत नहीं है, मुझे सब समझ में आ जाएगा। नंबर हो या बहस। आप मुझे केवल लॉजिक के साथ जवाब दे सकते हैं। मैं आपको अपना लॉजिक बताऊंगा। हमारी बात ऐसे ही आगे बढ़ेगी। इस सब में सहानुभूति नहीं छूटनी चाहिए।

पद्मश्री अलंकरण प्राप्त मशहूर उद्यमी सुनील भारती मित्तल को हाल ही में ब्रिटेन का सर्वोच्च 'नाइटहुड' सम्मान मिला है।

मुझ पर आरोप लगते हैं कि मैं कमजोर कड़ियों को वक़्त पर नहीं हटाता हूं जिससे कईं दफ़ा यह कंपनी को नुकसान पहुंचाता है। मुझे इस बारे में पता होता है। मैं खुद को सुधार रहा हूं। लेकिन अभी तक ठीक नहीं कर पाया हूं। मैंने जुनून को हमेशा दिमाग में जगह दी है और करुणा को दिल में। उच्च स्तर की सहानुभूति मैं हमेशा साथ रखता हूं। यही बात आपको हमारी कंपनी में नजर आएगी।

मैं आज भी खुद को ड्रीमर कहता हूं। मैं अभी भी नहीं बदला हूं, लेकिन अब मैं व्यापार के ज्यादा सपने नहीं देखता। कुछ सपनों का पीछा करने से मुझे अब जिम्मेदारियां रोक देती है, जो फिलहाल मुझ पर ज्यादा ही हैं। एयरटेल में अच्छा काम करते रहना ही सबकुछ नहीं है, नया व्यापार भी करना है। आज भी मेरा निजी सपना अंतर्राष्ट्रीय अधिग्रहण करने का है। ❑

लेख

क्रोध दुर्बलता है

❑

❑

डॉ. ओमप्रकाश टाक

लेखक
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में प्रोफेसर हैं।❑ सं.

महाभारत में यक्ष और युधिष्ठिर के बीच एक अद्भुत संवाद पढ़ने को मिलता है। यक्ष प्रश्न पूछता है कि किसे त्यागकर मनुष्य को पछतावा नहीं होता और किसे त्याग कर मनुष्य सबका प्रिय बनता है? युधिष्ठिर ओत्तर देते हैं कि क्रोध को त्याग कर पछतावा नहीं होता और अभिमान त्याग कर मनुष्य सबका प्रिय बनता है। वस्तुतः क्रोध और अभिमान दोनों मनुष्य के प्रबल शत्रु हैं। क्रोध की उत्पत्ति ही अभिमान से होती है और उसे दुर्वचन, अविनय तथा अधैर्य आगे बढ़ाते हैं। क्रोध मस्तिष्क के दीपक को बुझा देता है तथा बुद्धि-विवेक को निगल जाता है। क्रोध में मनुष्य सबसे कुरूप दिखाई देता है क्योंकि क्रोध का मुंह खुला और आंखें बंद रहती हैं। कहते हैं क्रोध सागर की तरह बहरा और अग्नि की तरह उतावला होता है। क्रोध में मनुष्य न कुछ देखता है और न सुनता है, वह सिर्फ धधकता है और अपने घर संसार को ही जला डालता है। इसके विपरीत क्रोध पर विजय पाने वाला मनुष्य विनयशील और क्षमाशील होता है, वह सारे संसार को अपना आत्मीय बना लेता है और परमार्थ साधना की दिशा में आगे बढ़ जाता है।

यदि हम देश और विश्व के महान लोगों की जीवनियों का अध्ययन करें तो मालूम होता है कि वे सभी शांत प्रकृति के लोग थे, उनका चित्त अधिकतर स्थिर रहता था और वे आसपास के लोगों के प्रति क्षमाशील भी थे। क्रोध और घृणा के आवेग उनमें नगण्य थे। अब तो चिकित्सा विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि जब हमारा मन शांत और स्थिर रहता है तभी हम एकाग्र रह पाते हैं, कार्य-कुशल बन पाते हैं और अपनी शक्ति को सत्कार्यों में लगा पाते हैं। अतः क्रोध विध्वंसकारी है और प्रशांति सृजनकारी। क्रोध से शक्तियों का क्षय होता है और प्रशांति से शक्ति वर्धन होता है। क्रोध मनुष्य के मन-मस्तिष्क की सबसे बड़ी कमजोरी है। क्रोध से बनाया हुआ भोजन भी मन की तरंगों को प्रभावित करता है और अंततः तामसिक बन जाता है। अतः आत्मविकास के लिये क्रोध का त्याग आवश्यक है। क्रोध को त्याग कर ही मनुष्य सच्चा शूरवीर बनता है।

मणिविज्ञानी बताते हैं कि क्रोध ऐसा विकार है जो हर मनुष्य में न्यूनाधिक मात्रा में पाया जाता है। संसार में ऐसा मनुष्य ढूंढना कठिन है जिसे कभी क्रोध नहीं आया हो। हमारे संत महापुरुषों ने हमेशा ही क्रोध के विकार पर चिंतन किया है और उससे मुक्त होने के लिये प्रेरणा भी जगाई है। संतों की वाणियां कहती हैं कि मनुष्य का क्रोध चार प्रकार का होता है - प्रथम लोहे में

लकीर सा जो तामसी मनुष्यों का होता है जो जन्म-जन्मांतर चलता है। दूसरा पत्थर मेंलकीर सा जो राजसी पुरुषों का होता है जो कुछ दिनों में मिट जाता है। तीसरा बालू में लकीर सा जो सात्विक सज्जनों में पाया जाता है। जो हवा के झोंके की तरह आता है और तत्काल नष्ट भी हो जाता है। चौथा पानी में लकीर सा जो संत फकीरों का होता है जो दिखता है पर वास्तव में होता नहीं। क्रोध की ये कोटियां बताती हैं कि क्रोध आना उतना बुरा नहीं होता जितना क्रोध का टिके रहना बुरा होता है। क्रोध पर विजय पाना सबसे बड़ी जीवन साधना है। यदि मनुष्य क्रोध पर नियंत्रण पाना सीख जाता है तो वह परमात्मा का प्रिय बन जाता है। ऐसे मनुष्य की पहचान यह है कि उसे सारा संसार ही ईश्वरमय दिखाई देने लगता है और वह चाहकर भी किसी पर क्रोध नहीं कर पाता है। अक्रोध की यह स्थिति मनुष्य को परमात्मा के निकट पहुंचा देती है। अतः अक्रोधी प्रकृति मनुष्य के लिये वरदान है। यह मनुष्य और ईश्वर के बीच सबसे बड़ा सेतु है।

मनुष्य किस प्रकार क्रोध को जीत कर ऊपर उठता है और ईश्वरमय जीवन का प्रतीक बनाता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी है। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में अनेक घात-आघात झेलते हुए भी गांधी जी की अक्रोधी प्रकृति बनी रही और उन्होंने कोई भी बात क्रोध या द्वेष वश नह। इन कही। वस्तुतः गांधी जी ने अक्रोध की प्रकृति को सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही साधा था। वे मानते थे कि क्रोध से प्रतिशोध की भावना बढ़ती है और उसके भयंकर दुष्परिणाम होते हैं। क्रोध पर विजय पाने वाला मनुष्य ही सत्याग्रही बन पाता है। गांधीजी क्रोध को क्षणिक पागलपन मानते थे और उसे पाप का मूल भी कहते थे। उनकी दृष्टि में क्रोधी खुद को तो जलाता ही है आसपास के लोगों को भी पीड़ित करता है। क्रोध से मनुष्य उसका ही अपमान नहीं करता जिस पर क्रोध करता है बल्कि यह अपनी प्रतिष्ठा भी गंवा देता है। गांधी दर्शन में क्रोधहीन मनुष्य देवता है और उसी में मानव जाति की सेवा करने की पात्रता निहित है।

मनुष्य किस प्रकार क्रोध को जीत कर ऊपर उठता है और ईश्वरमय जीवन का प्रतीक बनाता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी है। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में अनेक घात-आघात झेलते हुए भी गांधी जी की अक्रोधी प्रकृति बनी रही और उन्होंने कोई भी बात क्रोध या द्वेष वश नह। इन कही। वस्तुतः गांधी जी ने अक्रोध की प्रकृति को सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही साधा था।

दुर्भाग्य से आज तनाव एवं क्रोध हमारे जीवन का हिस्सा बन गए हैं। सहिष्णुता और सहनशक्ति का तो जैसे अकाल ही पड़ रहा है। जिस मनुष्य में स्वनियंत्रण एवं आत्मानुशासन का अभाव होता है, उसे में क्रोध की चिंगरियां ज्यादा फूटती है। जो व्यक्ति क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से भी बच जाता है। हमारे शास्त्र ईर्ष्या, लोभ और क्रोध से बचने की सीख देते हैं और इसी को धर्म प्राप्ति का मार्ग बताते हैं। क्रोध तो साक्षात यमराज है। क्रोधाग्नि में जलने वाला मनुष्य शीघ्र ही मृत्यु के मुख में समय जाता है। क्रोध मनुष्य की दुर्बलता और मूर्खता को दिखाता है। अतः क्रोध हर स्थिति में त्याज्य है। क्रोध को विनय, क्षमा, प्रेम, धैर्य और विवेक से जीता जा सकता है और यही मनुष्य के उत्कर्ष की पहचान है।

अतः मानना चाहिए कि क्रोध एक क्षणिक आवेश है जो सिर्फ कलह पैदा करता है। क्रोध पर काबू पाने से मानिबल बढ़ता है तथा क्रोधी के शाप से आशीष का फल मिलता है। क्रोध की जटिल दुनिया से पार उतारने का यह स्वर्णिम सूत्र है। ❑

इमली : स्वादिष्ट मसाला ही नहीं, औषधि भी !

डॉ.देवदत्त शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के उद्यान में लगे औषधीय पौधों और वृक्षों के परिचय के क्रम में हम इस बार 'इमली' की जानकारी दे रहे हैं। ❑सं

भारत में सदियों से इसके फल का इस्तेमाल रसोई में किया जाता रहा है। किसी भी प्रकार के व्यंजन में खटास लाने के लिए आम तौर पर इमली का ही इस्तेमाल किया जाता है। यह लेग्युमिनोसी कुल का पेड़ है जो पूरे भारत में पाया जाता है। भारत इमली का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत के अलावा यह अफ्रीकी देशों मे भी बड़ी मात्रा मे पाया जाता है। यह सदा हरा रहने वाला पेड़ है। आम तौर पर इमली का पेड़ 12 से 18 मीटर तक ऊंचा होता है, मगर अनुकूल स्थानों पर यह 25 मीटर तक ऊंचा चला जाता है।

वनस्पतिशास्त्रियों ने इसे टेमेरिंडस इंडिका का नाम दिया हुआ है। संस्कृत में इसे अम्लिका, अम्ली, अत्यम्ला, भुक्ता, चारित्रा, चिंची, चिंचिका, दंतशठा, गुरूपत्रा, सर्वाम्ला, तिंतिडिका, यमदूतिका और हिन्दी में इसे इमली के नाम से जाना जाता है। बंगाली में इसे तेंतलू, मराठी में अमली, गुजराती में आंबली, मलयालम और तमिल में पुली कहते हैं।

इमली के वृक्ष की लकडियां भी काफ़ी मजबूत होती है। इसलिए इसे कुल्हाड़ी इत्यादि जैसे सामग्री के निर्माण में काम में लिया जाता है। इसके पेड़ का ताना काफी मोटा होता है तथा इसका छत्र भी बहुत बड़ा होता है जो छांव भी देता है। इसके ताने की छाल खुरदरी और गहरे धूसर रंग की होती है। इसकी पत्तियां छोटी होती हैं और जोड़े के रूप में आपने-सामने जुड़ी रहती हैं। इस वृक्ष के फ़ल जब कच्चे होते हैं, तो हरे रंग के दिखाई देते है लेकिन जब पक जाते हैं तो ये लाल रंग के हो जाते हैं। इस पेड़ को तैयार होने में 8 वर्ष लगते हैं जिसके बाद इस वृक्ष में फ़ल आने शुरू हो जाते है। इमली के वृक्ष में साल में एक बार फल लगते हैं जो फरवरी और मार्च के महीनों में पक जाते हैं।

इमली के पौधों की रोपाई का उचित समय जून-जुलाई हैं। इसकी बुवाई सीधे बीजों द्वारा या बीज के माध्यम से नर्सरी में पौध तैयार करके की जाती है। इमली के वृक्ष के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु उत्तम रहती हैं। उष्ण जलवायु की गर्मी और गर्म हवाओं को सहन करने में सक्षम हैं जबकि ठंडी जलवायु में पाले से इसकी वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पौधरोपण के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी होती है। वर्षा के मौसम में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन गर्मी

मे विशेष समय के अंतराल में पौधों को पानी देना होता है तथा मिट्टी में नमी बनाए रखनी पड़ती है। बीज द्वारा प्रचारित पौधे, रोपण के 7-8 साल बाद और जबकि ग्राफ्टेड या कलम विधि द्वारा पौधे रोपण के 4-5 साल बाद फल देने लगते हैं। फलों की कटाई जनवरी-अप्रैल के महीनों में की जाती है।

यह एक सुंदर और उपयोगी पेड़ तो है ही, औषधीय गुणों से भी यह भरपूर है। इसमें कैरोटीन, विटामिन 'सी' और 'बी' पाया जाता है। इमली के गूदे में मौजूद टारटरिक और पेक्टिन की गुणवत्ता काफ़ी अच्छी होती है यह एंटीआक्सीडेंट का अच्छा स्रोत होने के कारण कैंसर से लड़ने की क्षमता रखता है। यह बुखार में फायदेमंद होती है। इमली की पत्तियों का पेस्ट सूजन के अलावा दाद पर भी लगाया जाता है। इमली के बीज का उपयोग आंखों के ड्राप तैयार करने में किया जाता है। इमली के फूलों के रस का उपयोग बवासीर के उपचार में किया जाता है। इमली कोलेस्ट्राल के स्तर को कम करने में मदद करती है इसलिए इसे हृदय का टॉनिक माना जाता है। इसका उपयोग पित्त विकार, पीलिया और सर्दी के उपचार में भी किया जाता है। यह पाचन में भी काफ़ी उपयोगी होती है। ❑

मरु मंथन 2024:
रेगिस्तानी जज़्बे का जश्न

पिछले तीन सालों में सामाजिक उत्सव का रूप ले चुके 'मरुमंथन' का जैसलमेर में फरवरी माह में हुआ इस वर्ष का शिखर सम्मेलन सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं था; वह एक आंदोलन था। डेज़र्ट रिसोर्स सेंटर द्वारा आयोजित यह उत्सव में रेगिस्तान के लोगों की जीवटता, साहस और परिश्रम का इंद्रधनुष बन कर प्रस्तुत हुआ। मरुभूमि में बीते कई वर्षों से बदलाव की क्रांति के प्रथम पंक्ति के योद्धा रहीं महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था।

मरु मंथन 2024 का उद्घाटन करते हुए गत 14 फरवरी को उरमूल ट्रस्ट की श्रीमती सुशीला ओझा ने रेगिस्तानी जैवक्षेत्रों में परिवर्तनकारी परिवर्तन की आधारशिला रखी। इस उत्सव ने रेगिस्तान को स्थिर रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति को चिति किया।

इस अवसर पर मरुस्थलीकरण से निपटने और जैव विविधता को बढ़ाने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण को उत्प्रेरित करते हुए ग्लोबल डेजर्ट एलायंस की शुरुआत की गई।

दो दिन के सम्मेलन में डॉ. सुमंत व्यास, ताकायुकी हागिवारा, डॉ. अशोक दलवई, डॉ. भास्कर चटर्जी, श्री अजीत चौधरी और कई अन्य ने आधुनिक अंतर्दृष्टि के साथ पारंपरिक ज्ञान का मिश्रण करते हुए टिकाऊ रेगिस्तानी भविष्य की खोज पर जीवंत संवाद किया। ।

'थार की टेपेस्ट्री' प्रदर्शनी ने रेगिस्तान की समृद्ध विरासत और क्षमता का जश्न मनाया, जबकि सामुदायिक सशक्तिकरण सत्रों में स्थानीय ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। सतत विकास की दिशा में सामूहिक यात्रा को जारी रखने की प्रतिबद्धता के साथ शिखर सम्मेलन का समापन हुआ।

श्रीमती ओझा के अनुसार शिखर सम्मेलन सतत विकास की दिशा में एक सामूहिक प्रयास बताते हुए आशा प्रकट की कि सभी एक साथ मिलकर मरु मंथन 2024 की गति को आगे बढ़ाते हुए रेगिस्तानी क्षेत्रों और उससे आगे प्रभावशाली बदलाव जारी रहेंगे ताकि सामुदायिक जुड़ाव से रेगिस्तान की समस्याओं के स्थानीय समाधान खोजे जाएंगे। ❑

ध्रुपद के दिग्गज गायक तैलंग का निधन

ख्यातिनाम ध्रुपद गायक पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग का पिछले दिनों जयपुर में निधन हो गया। वह 95 वर्ष के थे।

गत 25 जनवरी को ही उन्हें पद्मश्री पुरस्कार दिए जाने की भारत सरकार की ओर से घोषणा हुई थी।
पंडित तैलंग का जन्म साल 1928 में पंडित गोकुल चन्द्र भट्ट के घर में हुआ था। उनकी बचपन से संगीत में रुचि थी। आगे जाकर वे ध्रुपद के दिग्गज गायक बने।

वे 1950 से 1992 तक वनस्थली विद्यापीठ और 1991 से 1994 तक राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर में संगीत व्याख्याता रहे। इनके अलावा, वह 1985 में जयपुर में 'रसमंजरी संगीतोपासना केंद्र' और 2001 में 'अंतर्राष्ट्रीय ध्रुपद-धाम ट्रस्ट' के संस्थापक और निदेशक भी थे।

पंडित तैलंग का पूरा जीवन गायन में बीता और उन्होंने अपने बेटे रविशंकर और बेटियों शोभा, उषा, निशा, मधु, पूनम और आरती को संगीत की शिक्षा दी और उन्हें विभिन्न विधाओं में पारंगत बनाया।❑

रेडियो के स्वर्ण युग की आवाज़ थम गई

जाने-माने रेडियो प्रसारक अमीन सायानी जो अपने जीवककाल में ही लीजेंड के रूप में स्थापित हो गए थे का 91 की उम्र में मुंबई में निधन हो गया।

वे भारत में व्यावसायिक प्रसारकों की शुरुआती पीढ़ी में से थी और जो रेडियो के जमाने में पानी जो पहचान बनाई और उसे अंत तक बनाये रखते हुए यश कमाया वह भारत के प्रसारण इतिहास का सुनहरा पृष्ठ है।

उन्होंने 1952 में रेडियो सीलोन से प्रसारण करियर की शुरुआत की थी। उनकी लरज़ती आवाज़ से सजे बिनाका गीतमाला कार्यक्रम के वहाँ से प्रसारण की जैसी शोहरत दुनिया भर में फैली वह अपने अंदर इतिहास है।

सायनी आने वाली प्रसारकों की पीढ़ियों के अपने जीवन के अंत तक आदर्श बने रहे। पिछली सदी के 60 के दशक से लेकर 90 के दशक तक ऐसा कोई साइन अभिनेता या अभिनेत्री होगी उनके रेडियो प्रोग्राम में भाग न लिया हो।

सायनी की विदाई के साथ आवाज़ का जादूगर चला गया। प्रसारण जगत का अनूठा सितारा ओझल हो गया। रेडियो का सुनहरा अध्याय अतीत में सिमट गया। उम्रदराज़ होते हुए भी वे दिल से हमेशा जवान रहे। बीमारी और कमजोरी के बावज़ूद, 91 साल की उम्र तक सक्रिय रहे।
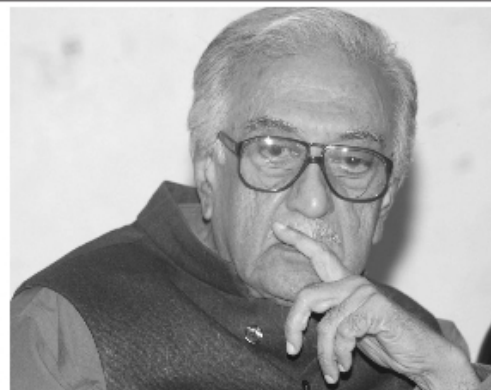
अमीन सायानी

उनके माता पिता स्वतंत्रता सेनानी थे। उनके पिता चिकित्सक थे। उनकी मां कुलसुम सायानी महात्मा गांधी की करीबी थीं, यही वजह है कि सयानी खुद को गांधीवादी कहते थे। उनकी मां ने महात्मा गांधी की नई तालीम की प्रेरणा से नवसाक्षरों के लिये 1945 से 1960 तक 'रहबर' नाम की पत्रिका निकाली जिसमें किशोर उम्र के अमीन सायानी संपादकीय सहयोग करते थे। ❑

डॉ. अशोक बापना नहीं रहे

विकास के मुद्दों पर बड़ा अकादमिक काम करने वाले डॉ. अशोक बापना का 28 जनवरी को जयपुर में निधन हो गया। शिक्षा और मानव संसाधन विकास पर उन्होंने अनेकों राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियां आयोजित की जिनमें विशेषज्ञों ने विकास के बारे में अकादमिक और व्यवहारिक दृष्टि दी। इन गोष्ठियों की डॉ. बापना की संपादित रपटें अनुसंधानकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज बनी हुई हैं।

डॉ. बापना राज्य योजना आयोग के सदस्य रहे। उनके निर्देशन और संपादन में राजस्थान की पहली ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट का प्रकाशन हुआ। आपको राज्य सरकार ने दो बार सम्मानित किया।

रोम स्थित अंतरराष्ट्रीय संस्था सोसायटी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (एसआईडी) के भारतीय चैप्टर का उन्होंने लंबे समय तक नेतृत्व किया।

राज्य सरकार में परियोजना अधिकारी पद पर अनूठी सेवाएं देकर अवकाश प्राप्त करने बाद वे अनेक शिक्षण और प्रबंध संस्थाओं से जुड़े रहे।

डॉ. बापना की सहधर्मिणी ऊषा बापना शिक्षा विभाग में उच्चअधिकारी रही जो अभी आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान से सक्रिय जुड़ी है। उन्होंने अपने स्वर्गगीय पति के नेत्र दान कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। श्रीमती बापना जो राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की राज्य संदर्भ केंद्र परियोजना की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं, सामाजिक सेवा कार्यों में सक्रिय रहती हैं।❑

RS-CIT एक विस्तृत बेसिक कंप्यूटर कोर्स है जिसकी मदद से कंप्यूटर के आवश्य कौशल सीख कर कंप्यूटर पर कार्य करने में दक्षता हासिल की जा सकती है एवं विभिन्न डिजिटल सुविधाओं के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है

RS-CIT कंप्यूटर कोर्स ही क्यों ?

ई-लर्निंग पर आधारित, ऑडियो-विडियो कंटेंट तथा चरणबद्ध असेसमेंट
राज्य सरकार की विभिन्न सरकारी नौकरियों में एक पात्रता ।
शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 6500 ज्ञान केंद्र ।
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा द्वारा परीक्षा एवं प्रमाण पत्र ।

अन्य कोर्सेज

- Financial Accounting
- Spoken English & Personality Development
- Desktop Publishing
- Digital Marketing
- Advanced Excel
- Cyber Security
- Business Correspondence

नजदीकी ज्ञान केंद्र के लिए www.rkcl.in पर विजिट करें या 9571237334 पर WhatsApp करें

स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा क्लासीफाइड प्रिन्टर्स, जयपुर में मुद्रित तथा 7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। संपादक- राजेन्द्र बोड़ा

RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X
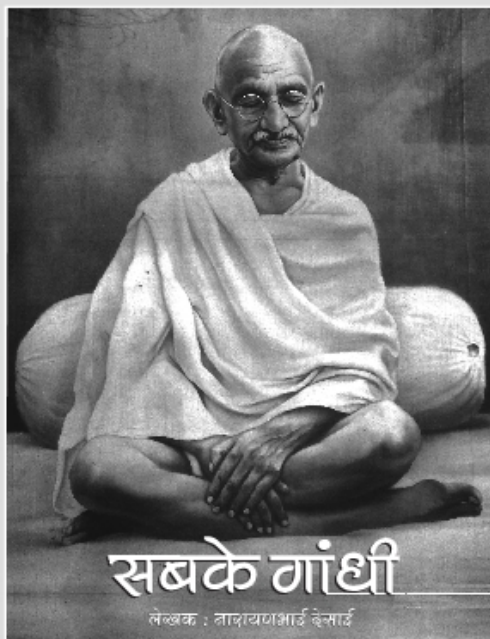
सहयोग राशि के लिए
बैंक विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur
I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH
(Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

12 पुस्तकों के एक सैट की सहयोग राशि रुपये 500/– मात्र डाक खर्च अलग से देय होगा।